Shodh Sanchay
Shree Naroda Kelavani Mandal Sanchalit
SMT. A.P. PATEL ARTS & LATE SHREE N.P. PATEL COMMERCE COLLEGE
Shree Prahladbhai Kashidas Patel Vidhya Sankul, Naroda, Ahmedabad-382330.
Reaccredited by NAAC with B Grade Third Cycle | Accredited - by 'AAA'= ⭐⭐⭐⭐ 4 Star
Phone : 079-22816582, M.: 8866388134 E-mail : narodacollage1993@yahoo.com

Volume - 1

डॉ.सुरेश पी. पटेल (एसोसिएट प्रोफेसर)
हिन्दी विभागाध्यक्ष,
श्रीमती ए.पी.पटेल आर्ट्स एण्ड स्व.श्री एन.पी. पटेल कॉमर्स कॉलेज नरोडा, अहमदाबाद
गुजरात-382330 Mo.9998668155
Email-shyam1468@gmail.com
दिनांकः 5 अगस्त, 2024

'सूरज का सातवाँ घोडा'–उपन्यास एवं चलचित्र का तुलनात्मक अध्ययन

Abstract:

सभी विद्वानों ने स्वीकार किया है कि उपन्यास और चलचित्र समाज की एक महत्वपूर्ण विधा है।दोनों में एक प्रकार का अंतर होते हुए भी दोनों समाज के दर्पण है। 'सूरज का सातवाँ घोडा' हिन्दी के प्रमुख कथाकार धर्मवीर भारती का एक प्रयोगात्मक उपन्यास है।इस उपन्यास की कथा को निर्देशक श्याम बेनेगल ने अपने चलचित्र की कथा का विषय बनाया है।वैसे देखा जाय तो सभी रचनाओं का फिल्मीकरण नहीं होता पर समाज को नया संदेश देने वाली जो प्रमुख रचनाएँ होती हैं उसका फिल्मीकरण निर्देशक अवश्य करते हैं। 'सूरज का सातवाँ धोड़ा' उपन्यास और चलचित्र दोनों विधाओं की हिन्दी पाठकों और दर्शकों ने सराहना की है। जिस उदेश्य से धर्मवीर भारती ने उपन्यास लिखा उसी उदेश्य की पूर्ति के लिए चलचित्र निर्देशक ने इसी कथा को समाज के लाखों-करोडों लोगों तक पहुँचाया हैं।

Key Words:

तुलनात्मक, उपन्यास, चलचित्र, मानवता,चरित्र, निर्देशक

Introduction:

साहित्य समाज का दर्पण हैं। साहित्यिक विधाओं में उपन्यास समाज की विभिन्न प्रकार की स्थितियों से अवगत कराने में सबसे ज्यादा सटीक विधा है। जहाँ तक उपन्यास व चलचित्र का संबंध है मेरा मानना है कि चलचित्र को साहित्यिक विधाओं से देखने का प्रयत्न करें तो सारी विधाओं में सबसे ज्यादा नजदीकी रिश्ता उपन्यास से हैं। उपन्यास जीवन का संधर्षपूर्ण चित्र है तो चलचित्र जीवन की संधर्षपूर्ण अभिव्यक्ति का सुंदर चित्रात्मक रूप है।

वैसे तो उपन्यास श्रव्य विधा है और चलचित्र दृश्य श्रव्य विधा। दोनों की प्रस्तुति की भूमिका भी अलग-अलग है फिर भी दोनों का प्रयोजन आनंद प्रदान करना रहा है। दोनों को अपनी-अपनी परिधि एवं मर्यादा में रहकर काम करना होता है। उपन्यास पर आधारित चलचित्र जब निर्माण होती है तब उसका तुलनात्मक अभ्यास करना रोचक हो जाता है। उपन्यास में पुस्तक के पन्नों पर कथा स्रोत बहता नजर आता है तो चलचित्र पर्दे पर चित्रों के माध्यम से उस बहाव में

Shodh Sanchay
Shree Naroda Kelavani Mandal Sanchalit
SMT. A.P. PATEL ARTS & LATE SHREE N.P. PATEL COMMERCE COLLEGE
Shree Prahladbhai Kashidas Patel Vidhya Sankul, Naroda, Ahmedabad-382330.
Reaccredited by NAAC with B Grade Third Cycle | Accredited - by 'AAA'= ⭐⭐⭐⭐ 4 Star
Phone : 079-22816582, M.: 8866388134 E-mail : narodacollage1993@yahoo.com

'सूरज का सातवाँ घोडा' उपन्यास धर्मवीर भारती रचित है। इसी उपन्यास पर चलचित्र निर्माता श्याम बेनेगल ने चलचित्र का निर्माण किया है। 'सूरज का सातवाँ घोडा' उपन्यास और चलचित्र मेरे आलेख का मूलाधार है। तुलनात्मक अध्ययन करते हुए मैंने उपन्यास और चलचित्र दोनों के कथ्य, चरित्र, संवाद, परिवेश, भाषा-शैली तथा उद्देश्य का आधार लिया है।

**** उपन्यास एवं चलचित्र की कथावस्तु का तुलनात्मक अध्ययन :**

घर्मवीर भारती ने 'सूरज का सातवाँ घोडा' उपन्यास में जिस कथा का प्रयोग किया है वही कथा चलचित्र निर्देशक श्याम बेनेगल ने अपने चलचित्र में ली हैं। लेखक की कथा से अलग निर्देशक चलचित्र में केवल एक प्रसंग को जोडा है। वह है–महेसर दलाल एवं दुकानदार का प्रसंग । घर्मवीर भारती ने जिस सात कहानियों को माध्यम बनाकर उपन्यास की कथा कही है, उसी कथातत्व को निर्देशक ने अपनाया है। उपन्यास एवं चलचित्र में कुछ समानताएँ और विषमताएँ देखने मिलती हैं। जिसकी चर्चा हम यहाँ करेंगे।

1. पहली दो पहर : (नमक की अदायगी)

लेखक ने उपन्यास का आरंभ गरमी की दोपहर के वर्णन से किया है। माणिकमुल्ला और उनके मित्र कमरा बंद करके सिर के नीचे भीगा तौलिया रखकर चुपचाप लेटे हैं। जबकि चलचित्र निर्देशक श्याम बेनेगल ने चलचित्र के आरंभ में माणिक मुल्ला को खरबूजा काटते हुए बताया है। इसी घटना से चलचित्र का आरंभ होता है। लेखक ने उपन्यास में माणिक की उम्र 10 साल और जमुना की उम्र 15 साल बतायी है। चलचित्र में निर्देशक ने दृश्य विधा को ध्यान में रखते हुए माणिक और जमुना को नायक-नायिका के उम्र का बताया है। लेखक ने उपन्यास में बताया है कि जमुना माणिक की उम्र से बडी थी और बडी होने के नाते वह माणिक के पकडकर दोनों कान उमेठती और मौके बेमौके चुटकी काटकर सारा बदन लाल कर देती थी। इस घटना का चलचित्र निर्देशक ने उल्लेख ही नहीं किया है। लेखक ने उपन्यास में बताया हैं कि एक दिन माणिक के यहाँ मेहमान आने से रात अधिक हो गई। इसी कारण भाभी गैया की टिक्की देने हेतु माणिक के पास आती है तब माणिक सो गये होते हैं। जब कि चलचित्र निर्देशक ने माणिक को किताब पढते हुए दिखाया है। उपन्यास में लेखक बताया है कि माणिक जब दूसरी रात को गैया को टिक्की देने आते हैं तब जमुना ने घानी रंग की वाइल साडी पहनी थी जब कि चलचित्र में निर्देशक ने जमुना की साडी को नीले रंग की दिखायी है। उपन्यास में जमुना माणिक के लिए पुए के साथ कैथे की चटनी भी लाती है जबकि निर्देशक ने चलचित्र में अकेले पुए ही खिलाते दिखाया है। उपन्यास में लेखक ने बनिया का नाम पंचम बनिया बताया है जबकि निर्देशक ने चलचित्र में बनिया का नाम बताया ही नहीं है। उपन्यास में लेखक ने तन्ना की माँ की जगह लाये जाने वाली स्त्री की बात तीसरी दो पहर में बतायी गयी है जब कि निर्देशक ने चलचित्र में पहली दो पहर में उसका संकेत दे दिया है।

(2) दूसरी दोपहर : (घोडे की नाल)

उपन्यास मे लेखक ने खरबूजा काटने की बात दूसरी दोपहर में बतायी हैं जबकि निर्देशक ने चलचित्र के आरंभ में ही दिखा दिया है। उपन्यास में लेखक ने बताया है कि जमुना

Shodh Sanchay
Shree Naroda Kelavani Mandal Sanchalit
SMT. A.P. PATEL ARTS & LATE SHREE N.P. PATEL COMMERCE COLLEGE
Shree Prahladbhai Kashidas Patel Vidhya Sankul, Naroda, Ahmedabad-382330.
Reaccredited by NAAC with B Grade Third Cycle | Accredited - by 'AAA'= 4 Star
Phone : 079-22816582, M.: 8866388134 E-mail : narodacollage1993@yahoo.com

Volume - 1

होगा। उपन्यास में लेखक ने बताया है कि जमुना के पिता को बैंक के हिसाब में एक सौ सताईस रूपया तेरह आने की गरबड थी जबकि चलचित्र में निर्देशक ने पाँच सौ रूपये बारह आने की गरबड दिखाई है। उपन्यास में लेखक ने दूसरी दो पहर में तन्ना के मरने का संकेत नहीं बताया है जबकि चलचित्र निर्देशक ने रामघन के द्वारा तन्ना के मरने का संकेत दूसरी दो पहर में बताया है। उपन्यास में लेखक ने बताया है कि जमुना जब विधवा होती है तो उसे अडोस-पडोस वाले सांत्वना देते हैं जबकि निर्देशक ने चलचित्र में जमुना की माँ को सान्वना देते हुए बताया है।

(3) तीसरी दोपहर :(शीर्षक माणिक मुल्ला ने नहीं बताया)

उपन्यास में लेखक ने तन्ना की तीन बहनों का उल्लेख किया हैं और तीनों का नाम बताया नहीं है। जब कि चलचित्र में निर्देशक ने दो बहनों का उल्लेख किया है और उनके नाम भी बताये हैं एक का कमला और दूसरे का विमला। उपन्यास में लेखक ने बताया है कि महेसर दलाल दूसरी औरत को घर में ले आते हैं तो माणिक और उसकी बहनें उनको बुआ कहकर बुलाते हैं जबकि चलचित्र में उसका नाम मौसी बताया है। उपन्यास में लेखक ने बताया है कि बुआ (महेसर दलाल की दूसरी पत्नी) तन्ना की माँ के तमाम जेवर लेकर गायब हो जाती है जब कि चलचित्र में निर्देशक ने बताया है कि महेसर दलाल खुद उसे धक्के मारकर घर से निकाल देते हैं। उपन्यास में लेखक ने महसेर दलाल की मृत्यु दिखाई है जब कि चलचित्र निर्देशक ने महेसर दलाल की मृत्यु नहीं दिखाई है।

(4) चौथी दोपहर :(मालवी की युवरानी देवसेना की कहानी)

उपन्यासकार धर्मवीर भारती ने उपन्यास में चौथी दोपहर में जो बातें बताई हैं वे सभी बातों को चलचित्र निर्देशक ने अपनायी हैं। इसलिए चौथी दो पहर की कहानी में उपन्यास एवं चलचित्र में कोई विसंगतता देखने को नहीं मिलती।

(5) पाँचवी दोपहर :(काले बेंट का चाकू)

उपन्यास में लेखक ने बताया है कि चमन ठाकुर महेसर दलाल से पाँचसौ रूपये लेकर सत्ती को साथ भेजने की शर्त करता है जबकि चलचित्र में महेसर दलाल चमन ठाकुर को एक हजार रुपये देता है।

(6) छठी दोपहर :(क्रमागत-पिछली दोपहर से आगे)

उपन्यास में लेखक ने बताया है कि तन्ना की जगह नौकरी माणिक मुल्ला को मिलती है। यह बात लेखक ने छठी दोपहर में बतायी है जबकि निर्देशक ने चलचित्र में दूसरी दो पहर में इसका संकेत दे दिया है।

(7) सातवीं दोपहर :(सूरज का सातवाँ घोडा)

उपन्यासकार घर्मवीर भारती ने सातवीं दोपहर में जो बातें निष्कर्ष रूप में कहीं हैं वही बातें निर्देशक ने चलचित्र में बताई हैं।

**** उपन्यास एवं चलचित्र के चरित्रों का तुलनात्मक अध्ययन :**

'सूरज का सातवाँ घोडा' उपन्यास के प्रमुख पाँच पुरुष चरित्र हैं—माणिक मुल्ला, तन्ना,

Shodh Sanchay
Shree Naroda Kelavani Mandal Sanchalit
SMT. A.P. PATEL ARTS & LATE SHREE N.P. PATEL COMMERCE COLLEGE
Shree Prahladbhai Kashidas Patel Vidhya Sankul, Naroda, Ahmedabad-382330.
Reaccredited by NAAC with B Grade Third Cycle | Accredited - by 'AAA'= 4 Star
Phone : 079-22816582, M.: 8866388134 E-mail : narodacollage1993@yahoo.com
Volume - 1

'सूरज का सातवाँ घोडा' उपन्यास का मुख्य चरित्र या नायक माणिक मुल्ला है। प्रमुख चरित्र के आसपास कथा आकार लेकर, चरमसीमा की ओर अग्रसर होती हुई उद्देश्य की ओर आगे बढती है। कहानी के नायक माणिक मुल्ला जमुना, लिली और सत्ती से प्रम करते हैं, पर किसी से विवाह नहीं कर पाते।वह मध्यवर्गीय बुध्धिजीवी वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस प्रकार **"भारती ने इस उपन्यास में नगरीय निम्न मध्यवर्ग की जिन्दगी को उसके कटु यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है।"**[1] माणिक मुल्ला ने समाज को अपनी आँखों से निकट से देखा है। लेखक ने उपन्यास में माणिक मुल्ला के चरित्र को जिस प्रकार चित्रित किया है उससे थोडा अलग निर्देशक ने चलचित्र में चित्रित किया है। निर्देशक ने चलचित्र में माणिक की उम्र थोडी अधिक बताई है। तन्ना जैसा आदर्शवादी व्यक्ति जो आदर्श के बोझ तले दबकर मृत्यु को अपना लेता है। उसे अनेकों दु:ख झेलने पडते हैं। तन्ना की ईमानदारी के कारण कोई व्यवस्था ठीक से नहीं चल पाती। तन्ना की नौकरी छूट जाती है। यूनियन की कोशिश से उसे फिर से नौकरी मिल जाती है किन्तु अबतक उसे टी.बी. हो चुकी है। लिली उसे छोडकर चली जाती है। तन्ना की रेल दुर्घटना में दोनों पैर कट जाने से मृत्यु हो जाती है। तन्ना के चरित्र मे भी निर्देशक चलचित्र में थोडा बदलाव जरूर किया है। उपन्यास में तन्ना की लंबी बिमारी का निरूपण किया है और बाद में मृत्यु की बात कहीं है जबकि निर्देशक ने चलचित्र में तन्ना की लंबी बिमारी का चित्रण नहीं किया है। यहाँ निर्देशक ने समय की मर्यादा को ध्यान में रखा है।

जमुना उपन्यास में तीन नारी चरित्रों में प्रमुख है। वह इस उपन्यास की प्रमुख नायिका है। समस्यामूलक पात्र के रूप में लेखक ने जमुना को चित्रित किया है। वह मध्यवर्गीय नारी समाज का प्रतिनिधित्व करती है। निर्देशक ने चलचित्र में जमुना को अधिक स्वच्छंदी बताया है, उतना उपन्यास में नहीं है। उपन्यास एवं चलचित्र के चरित्रों का तुलनात्मक अध्ययन करें तो माणिक मुल्ला, जमुना, तन्ना, सत्ती, लिली, महेसर दलाल, चमन ठाकुर आदि सभी पात्र उपन्यासकार ने अपने उपन्यास में चित्रित किये हैं। निर्देशक ने चलचित्र में पात्रों को थोडा फेर-बदल करके चित्रित किया है।

** उपन्यास एवं चलचित्र के संवादों का तुलनात्मक अध्ययन :

'सूरज का सातवाँ घोडा' उपन्यास की संवाद-योजना में सजीवता के साथ-साथ चित्रात्मकता देखने मिलती है। संवादों के द्वारा पात्रों के गुण-दोष स्पष्टत: दिखाई देते हैं। पात्रों के आंतरिक व्यक्तित्व की विशेषताएँ संवाद-योजना के द्वारा स्पष्ट झलकती है। उपन्यास वर्णन-प्रधान होने के कारण संवाद अधिक नहीं आ पाये हैं। चलचित्र दृश्य एवं श्रव्य विधा होने के कारण उसमें संवादों का महत्व अधिक बढ जाता है। निर्देशक ने भी चलचित्र में उपन्यास के संवादों को बखुबी उतारने का प्रयत्न किया है। चलचित्र में संवादों की अधिकतर प्रस्तुति उपन्यास में आये संवादों की है। निर्देशक ने चलचित्र में महेसर दलाल और दुकानदार के संवादों को जोडा है, ये संवाद उपन्यास में नहीं है। चलचित्र में आये महेसर दलाल और दुकानदार का वर्णन एवं संवाद इस प्रकार है। जब महेसर दलाल दुकान पर बैठा होता है तो दुकानदार महेसर दलाल को कहता है कि–**"महेसरजी, मैंने**

Shodh Sanchay
Shree Naroda Kelavani Mandal Sanchalit
SMT. A.P. PATEL ARTS & LATE SHREE N.P. PATEL COMMERCE COLLEGE
Shree Prahladbhai Kashidas Patel Vidhya Sankul, Naroda, Ahmedabad-382330.
Reaccredited by NAAC with B Grade Third Cycle | Accredited - by 'AAA'= ⭐⭐⭐⭐ 4 Star
Phone : 079-22816582, M.: 8866388134 E-mail : narodacollage1993@yahoo.com

कुछ छोड गये हैं। लडकी ईन्टर में पढ रही है। कहो तो बात चलाऊँ। महेसर ने कहा दहेज में अच्छी रकम देंगे। इकलौती संतान है। महेसर ने कहा तब तो हमारी भेंट करवाओ। तुम्हें भी अपनी मेहनत का फल मिल जायेगा। ये लो तुम्हारी जेब खर्च के लिए।[2] लेखक ने उपन्यास में माणिक मुल्ला और सत्ती के संवादों को संक्षिप्त बताया है जबकि निर्देशक ने चलचित्र में विस्तार किया है। उपन्यास में संवाद इस प्रकार आया है– माणिक गये और सत्ती जितना इसरार करे जल्दी निकल चलने को कि कही महेसर दलाल या चमन ठाकुर ही न आ पहुँचे उतना माणिक किसी न किसी बहाने टालते जाये और जब सत्ती ने चाकू-चमकाकर कहा कि **"अगर नहीं चलोगे तो आज या तो मेरी जान जायेगी या और किसी की "।**[3] तो माणिक का रोम-रोम थेरा उठा और मन ही मन माणिक भईया का स्मरण करने लगे। इसी संवाद को निर्देशक ने चलचित्र में इस प्रकार बताये हैं–सत्ती माणिक को कहती है **" अब जल्दी से निकल जाओ माणिक बाबू नहीं तो चमन ठाकुर और महेसर दलाल आ पहुँचेंगे"। तो माणिक ने कहा थोडी देर रुक जाओ, सडक पर आना जाना थोडा कम हो जाये, तब निकलते हैं। अभी तो रेलगाडी भी नहीं है।सत्ती कहती है कि अभी तुम फौरन नहीं निकले तो आज मेरी जान जायेगी या किसी और की। तो माणिक ने कहा ठीक है, आधे घंटे बाद निकलते हैं, तब तक अपना सामान बाँध लेता हूँ। "**[4] उपन्यास में लेखक ने दूसरी दोपहर अर्थात् घोडे की नाल प्रकरण के संवाद पूरे नाटकीय ढंग से लिखे हैं। इस प्रकरण को देखकर लगता है कि यहाँ जो संवादों का प्रयोग लेखक ने माणिक मुल्ला और अपने मित्रों के बीच करवाये हैं वे अपने आपमें सफल भी है और पूर्ण भी। धोडे की नाल प्रकरण के अनघ्याय के संवाद उदाहरणार्थ देखिए–**"प्रकाश- क्या? क्या? व्याख्या दे सकते हो? मैं- (अकडकर) मार्क्सवादी।/ओंकार- अरे यार रहने भी दो।/श्याम- मुझे नींद आ रही है।/मैं- देखिए, असल में इसकी मार्क्सवादी व्याख्या इस तरह हो सकती है। जमुना मानवता का प्रतीक है, मध्यवर्ग (माणिक मुल्ला) तथा सामन्त वर्ग (जमींदार) उसका उध्धार करने में असफल रहे, अंत में श्रमिक वर्ग (रामघन) ने उसको नयी दिशा सुझायी।"**[5] जिस प्रकार उपन्यासकार ने उपन्यास में संवादों के रूप में अपनी बात सामने रखीं है उसी प्रकार निर्देशक ने चलचित्र में संवादों के रूप में अपनी बात कहीं है।

** उपन्यास एवं चलचित्र के परिवेश का तुलनात्मक अध्ययनः

घर्मवीर भारती ने 'सूरज का सातवाँ घोडा' उपन्यास में समय, स्थिति, परिवेश, तथा समसामयिक परिस्थितियों का पूरा-पूरा ख्याल रखा है। लेकिन **"उपन्यास की सबसे बडी कमजोरी यह है कि सातवें घोडे की कल्पना पूरी कहानी से उभरकर नहीं आती। यह अचानक ऊपर से जोडी गई-सी लगती है।"**[6] उपन्यास में आजादी के बाद के भारतीय लोगों का सामाजिक जीवन चित्रित है। उस समय भारतीय समाज आर्थिक परिस्थितियों से गुजर रहा था। समाज के अधिकांश लोगों का जीवन अभावग्रस्त था। घर्म के नाम पर अंधश्रध्धा की लहर चल पडी थी। लेखक ने उस समय के परिवेश का सही चित्रण प्रस्तुत किया है। निर्देशक ने चलचित्र में भी इसी वातावरण का ख्याल रखते हुए चलचित्र प्रस्तुत की है। मध्यवर्गीय समाज की परिस्थितियों का लेखक ने यहाँ विशद चित्रण किया है। गर्मी और बरसात के वातावरण का एक मिला-जुला चित्र देखिए–**" बेहद उमस। मन की गहरी से**

Shodh Sanchay
Shree Naroda Kelavani Mandal Sanchalit
SMT. A.P. PATEL ARTS & LATE SHREE N.P. PATEL COMMERCE COLLEGE
Shree Prahladbhai Kashidas Patel Vidhya Sankul, Naroda, Ahmedabad-382330.
Reaccredited by NAAC with B Grade Third Cycle | Accredited - by 'AAA'= ⭐⭐⭐⭐ 4 Star
Phone : 079-22816582, M.: 8866388134 E-mail : narodacollage1993@yahoo.com

है।"[7] लेखक ने धार्मिक पूजा-पाठ, अंध-विश्वसों का वातावरण भी यहाँ बखूबी से चित्रित किया है। जैसे– **"लेकिन किस्मत की मार देखिए कि उसी समय मुहल्ले में धर्म की लहर चल पडी और तमाम औरतें जिनकी लडकियाँ अनब्याही रह गयी थी, जिनके लडके लडाई में चले गये थे, जिनके जेवर बिक गये थे, जिन पर कर्ज हो गया था, सभी ने भगवान की शरण ली और कीर्तन शुरू हो गये और कण्ठियाँ ली जाने लगी। माणिक की भाभी ने भी हनुमान-चौतरावाले ब्रह्मचारी से कण्ठी ली और नियम के दोनों वक्त भोग लगाने लगी। और सुबह श्याम पहली टिक्की गऊ माता के नाम से सेंकने लगी।**[8] निर्देशक ने भी चलचित्र में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के समय के अंध विश्वासों का चित्रात्मक वर्णन किया है। जब जमुना को संतान-प्राप्ति नहीं होती तो वह मंदिर के एक ज्योतिषी के पास जाती है। ज्योतिषी कहते हैं– **" यदि पूरे कार्तिक मास में सुबह को उठने से पहले गंगा में स्नान करके आपकी पत्नी चंदी देवी को पीले फूल चढावें, ब्राह्मणों को चना, जोह और सोना दान दे तो गोद अवश्य भर जायेगी।**[9] उपन्यास एवं चलचित्र के परिवेश का तुलनात्मक अध्ययन करे तो जिस प्रकार उपन्यासकार ने समय,स्थिति के अनुरूप अपनी बात को उपन्यास में रखी है उसी बात को निर्देशक ने अपनी चलचित्र में प्रस्तुत की है। परिवेश चाहे आन्तरिक हो या बाह्यगत निर्देशक चलचित्र में बखूबी निभाया है।

**** उपन्यास एवं चलचित्र की भाषा-शैली का तुलनात्मक अध्ययन :**

'सूरज का सातवाँ घोडा' उपन्यास में घर्मवीर भारती ने दैनिक बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया है। लेखक ने अरबी, फारसी और अंग्रजी शब्दों का प्रयोग भी परिस्थिति के अनुसार किया है। प्रतीकात्मक, वर्णनात्मक, हास्य-वर्णात्मक भाषा-शैली का प्रयोग लेखक ने किया है। निर्देशक ने भी चलचित्र में भाषा का बखूबी प्रयोग किया है। आलोचकों ने कहा कि यह उपन्यास लेखक ने लोक-कथात्मक शैली में लिखा है और पंचतंत्र और हितोपदेशवाली शैली का प्रयोग किया है। एक उदाहरण द्खिए–**"अच्छा आप लोग चाहते हैं कि मैं कहानी का घटनाकाल चौबीस घंटे रखूँ और उसमें आपको सारा महाभारत और इनसाइक्लोपीडिया भी सुनाऊ।.....हाँ यह मैं आपको बता दूँ कि यह लिली वही लडकी थी, जिसका ब्याह तन्ना से हुआ था और उस दिन शाम को महेसर दलाल उसे देखने आनेवाला था।**[10] उपन्यास में लेखक ने अंग्रजी शब्दों का प्रयोग किया है। चलचित्र निर्देशक ने भी चलचित्र में अंग्रजी शब्दों का प्रयोग किया है। जैसे–ऑन, ऑफ, इनसाइक्लोपीडिया, रजिस्टर, ट्रेन, सुपरिण्टेणडेण्ट, टेम्परेचर, डिग्री आदि। वर्णनात्मक शैली का एक उदाहरण देखिए–**"खिडकी पर झूलते हुए जार्जेट के हवा से भी हलके परदों को चूमते हुए शाम के सूरज की उदास पीली किरणों ने झाँककर उस लडकी को देखा जो तकिए में मुँह छिपाये सिसक रही थी। उसकी रुखी अलकें खारे आँसू से घूले गालों को छुकर सिहर उठती थी। चम्पे की कलियों-सी उसकी लम्बी पतली कलात्मक उँगलीयाँ, सिसकियों से काँप-काँप उठनेवाला उसका सोनजुही सा तन, उसके गुलाब की सुखी पँखुरियाँ से होठ और कमरे का उदास वातावरण पता नहीं कौन-सा वह दर्द था जिसकी उदास उँगलियाँ रह-रहकर उसके व्यक्तित्व के मृणाल-तंतुओं के संगीत को झकझोर रही थी।**[11]

**** चलचित्र में गीत शैली का प्रयोग :**

Shodh Sanchay
Shree Naroda Kelavani Mandal Sanchalit
SMT. A.P. PATEL ARTS & LATE SHREE N.P. PATEL COMMERCE COLLEGE
Shree Prahladbhai Kashidas Patel Vidhya Sankul, Naroda, Ahmedabad-382330.
Reaccredited by NAAC with B Grade Third Cycle | Accredited - by 'AAA'= ⭐⭐⭐⭐ 4 Star
Phone : 079-22816582, M.: 8866388134 E-mail : narodacollage1993@yahoo.com

कहानी में किया है। इस गीत का उद्देश्य निर्देशक द्वारा लिली और माणिक के प्रेम को स्थापित करना है। गीत के शब्द निम्नलिखित हैं– **"ये....शामें.../सब की सब शामें.../क्या इनका कोई अर्थ नहीं.../गबराके तुम्हें याद किया.../क्या उन शामों का अर्थ नहीं.../सुनेपन के इन लम्हों ने/अपनी छाया से बातें की/दिल में कोई भी पल ना रहें/वे दिन की वीणा ये कहेगी/ये भीगे पन के ये लम्हें../क्या इन का कोई अर्थ नहीं/ये शामें.../सब की सब शामें/क्या इनका कोई अर्थ नहीं ।**[12] निर्देशक ने किल्म में गीत का दूसरा प्रयोग बन्ना के रूप में पाँचवी दो पहर (काले बेंट का चाकू कहानी में किया है। बन्ना के मुँह से इस प्रकार यह गीत फूट पडा है- **"हो.....ओ.....हो...../निमिया का पेड जीनी/कांटे हो बाबा.../निमिया बसेरा चिरैया....हो.../बिटी आयी जिन को/दुःख रे बाबा/बिटिया तजे स चिरैया.../उडी-उडी जै है.../सबेरे चिरैया../रही गई हो अकेली हो निमिया/हो...ओ.../बिटिया जै है...सासूर सबेरे/रही गई हैं अकेली हो मैया.../बिटिया तजै स चिरैया...."**[13]

**** चलचित्र में चित्रात्मक शैली का प्रयोग:**

'सूरज का सातवाँ घोडा' उपन्यास में घर्मवीर भारती ने वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया है जबकि निर्देशक ने चलचित्र में दृश्य विघा होने के कारण चित्रात्मक शैली का प्रयोग किया है। चित्रात्मक शैली उसे कहते हैं कि जिसमें शब्दों के माध्यम से चित्र खडा किया जाता है। उपन्यासकार घर्मवीर भारती ने 'सूरज का सातवाँ घोडा' उपन्यास में वर्णनात्मक शैली के जरिये अपनी बात पाठक तक पहुँचाने की कोशिश की है। वही बात निर्देशक ने शब्दों के जरिये परदे पर चित्र खडा करने का बखूबी प्रयत्न किया है।

**** उपन्यास एवं चलचित्र के उद्देश्य (प्रयोजन) का तुलनात्मक अध्ययन :**

"प्रयोजन मनुदिस्य लोके मन्दोऽपि न प्रतर्तते–" अर्थात् मूर्ख मनुष्य भी प्रयोजन के बिना कोई कार्य नहीं करता। घर्मवीर भारती ने भी अपने निवेदन में स्वीकार किया है कि **" जो कुछ लिखता हूँ उसमें सामाजिक उदेश्य अवश्य है, पर वह स्वान्तः सुखाय भी है।**[14] यहाँ लेखक यह बताना चाहते हैं कि जीवन के प्रति हमेशा अदम्य आस्था रखनी चाहिए। इस उपन्यास का मुख्य स्वर भी निराशा में छिपा हुआ आशा का स्वर है। आज सभी व्यक्तियों के जीवन में संधर्ष महत्वपूर्ण हो गया है। उपन्यास का अध्ययन करने के बाद उसके निम्नलिखित उद्देश्य हमारे सामने आते हैं– 1. निराशा पर आशा की विजय। 2. मानवता के सहजमूल्यों को पुनःस्थापित करना। 3. समाज के उज्जवल भविष्य की कल्पना।4. निम्न मध्यवर्ग का यथार्थ जीवन चित्रित करना। 5. निम्नवर्गीय जीवन का खोखलापन, झूठी नैतिकता और निराशावादी दृष्टिकोण को प्रस्तुत करना। 6. अर्थ और काम की धुरी के इर्द-गिर्द चक्कर काटनेवाले निम्न- मध्यवर्गीय जीवन का विडंबनात्मक चित्रण करना । **डा. सुषमा घवन 'सूरज का सातवाँ घोडा'** उपन्यास के संदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए लिखती है कि–**"सूरज का सातवाँ घोडा भविष्य के सपनों का घोडा है–भविष्य के सपनों का, जिसेमें हमारा जीवन अधिक सुख-शान्तिमय होगा, जिसमें निराशा पर आशा की विजय होगी।"**[15] घर्मवीर भारती ने अपने प्रस्तुत उपन्यास में एक नया प्रयोग किया है। शायद ऐसा प्रयोग उपन्यासों में भारती ने पहली बार किया है और यह प्रयोग भारती केवल ने कौतूक दिखाने के लिए नहीं किया

Shodh Sanchay
Shree Naroda Kelavani Mandal Sanchalit
SMT. A.P. PATEL ARTS & LATE SHREE N.P. PATEL COMMERCE COLLEGE
Shree Prahladbhai Kashidas Patel Vidhya Sankul, Naroda, Ahmedabad-382330.
Reaccredited by NAAC with B Grade Third Cycle | Accredited - by 'AAA'= 4 Star
Phone : 079-22816582, M.: 8866388134 E-mail : narodacollage1993@yahoo.com

धर्मवीर भारती लिखित 'सूरज का सातवाँ घोडा' उपन्यास को फिल्मी रूप में प्रस्तुत करना ही निर्देशक का चलचित्र में मूल उदेश्य है। उपन्यास के पन्नों पर लिखित एक रचना चलचित्र का रूप कैसे धारण करती है यह देखने जैसा है। वैसे देखे तो सभी रचनाओं का फिल्मीकरण नहीं होता। पर जो रचनाएँ एकदम अलग होती हैं, समाज के लिए प्रेरणादायी होती हैं, समाज को एक नयी दिशा देनेवाली होती है उनका फिल्मीकरण जरूर होता है। 'सूरज का सातवाँ घोडा' ऐसी ही एक अपना अनोखा अंदाज प्रस्तुत करनेवाली और समाज को एक नयी दिशा देनेवाली चलचित्र है। इस चलचित्र को लाखों-करोडों लोगों ने देखी है और उसकी सराहना की है। धर्मवीर भारती ने जिस उदेश्य को पूर्ण करने के लिए 'सूरज का सातवाँ घोडा' उपन्यास लिखा उसी उदेश्य को समाज के अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाना चलचित्र निर्देशक का उदेश्य रहा है।

कुल मिलाकर 'सूरज का सातवाँ घोडा' उपन्यास एवं चलचित्र का तुलनात्मक अध्ययन करने के पश्चात् हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि उपन्यास को पढने वाला वर्ग सीमित होता है जब कि चलचित्र देखने वाला वर्ग असीमित होता है। पढा-लिखा व्यक्ति ही उपन्यास पढ सकता है जब कि अनपढ व्यक्ति भी चलचित्र देख सकता है। उपन्यास का प्रभाव सभी पाठक पर उतना असर नहीं करता जितना चलचित्र का प्रभाव । उपन्यास पढते समय सभी पाठक के भीतर रस-निष्पत्ति नहीं होती जब कि चलचित्र देखते समय सभी दर्शकों के भीतर रस-निष्पत्ति होती है। उपन्यास समाज के सभी वर्ग को प्रभावित नहीं करता जब कि चलचित्र समाज के सभी वर्ग को प्रभावित भी करता है और सब के मन को छूता भी है।

संदर्भ-संकेतः

1. हिन्दी उपन्यास का इतिहास, गोपालराय,पृ.230
2. 'सूरज का सातवाँ घोडा' चलचित्र,श्याम बेनेगल
3. 'सूरज का सातवाँ घोडा', घर्मवीर भारती, पृ.86
4. 'सूरज का सातवाँ घोडा' चलचित्र,श्याम बेनेगल
5. 'सूरज का सातवाँ घोडा', घर्मवीर भारती, पृ.43
6. स्वातंत्र्योत्तर उपन्यासों का मूल्यांकन, अठारह उपन्यास,पृ.99
7. 'सूरज का सातवाँ घोडा' चलचित्र,श्याम बेनेगल
8. 'सूरज का सातवाँ घोडा', घर्मवीर भारती, पृ.24
9. 'सूरज का सातवाँ घोडा' चलचित्र,श्याम बेनेगल
10. 'सूरज का सातवाँ घोडा', घर्मवीर भारती, पृ.71
11. 'सूरज का सातवाँ घोडा', घर्मवीर भारती, पृ.63
12. 'सूरज का सातवाँ घोडा'चलचित्र,श्याम बेनेगल
13. 'सूरज का सातवाँ घोडा', चलचित्र,श्याम बेनेगल
14. 'सूरज का सातवाँ घोडा', घर्मवीर भारती, पृ.12
15. घर्मवीर भारती का उपन्यास साहित्य, सुषमा घवन,पृ.124